RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-02
February -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

पर्यावरणीय अवक्रमण एवं गाँधीजी का पर्यावरण चिंतन

डॉ0 सन्दीप पान्डेय

श्री निवास, स्वर्गद्वार, अयोध्या, उ0प्र0, 224123

आज यह जाहिर हो गया है कि हम प्राकृतिक जगत पर अपने अंतहीन आक्रमण तथा बगैर सोचे–विचारे उसमें बड़े फेर बदल करके इस अंधकार अविवेकपूर्ण उपयोग नहीं कर सकते और हमें करना भी नहीं चाहिए। क्योंकि इसके परिणाम हानिकारक होंगे। आधुनिक अनुसंधानों से मालूम हुआ है कि जैव मंडल पर मनुष्य के अनवरत एकतरफा और काफी हद तक अनियमित प्रभाव से हमारी सभ्यता एक ऐसी सभ्यता में तब्दील हो सकती है, जो मरुभूमियों को मरुद्यानों में रूपांतरित करने के स्थान पर मरुद्यानों को रेगिस्तानों में प्रतिस्थापित कर देगी। गांधी जी अपने काल में ही इतने प्रासंगिक हो गए कि वह एक विचारधारा बन गए थे। अल्बर्ट आइंस्टीन जब कह रहे थे कि आने वाली नस्लें भरोसा नहीं करेंगी कि दुनिया में ऐसा कोई हाड़–मांस का आदमी पैदा हुआ था तो उस वक्त गांधी पूरी दुनिया के लिए प्रासंगिक हो गए थे। आज के समय में जब समाज में नफरत और तनाव ज्यादा फैल रहा है, लोगों की जिंदगियां खतरे में हैं तो गांधी जी का प्रकृति प्रेम ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। आज जल, जंगल, जमीन के साथ इंसान भी नफरत के शिकार हो रहे हैं। हिंसा की भावना पूरे जैव जगत के लिए विध्वंसकारी होती है। 1987 में ब्रुडलैंड कमीशन रिपोर्ट के सामान्य भविष्य के विचार से बहुत पहले ही महात्मा गांधी ने स्थिरता और सतत विकास के लिए लगातार बढ़ती इच्छाओं और जरूरतों के अधीन आधुनिक सभ्यता के खतरों की ओर ध्यान दिलाया था। अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में उन्होने लगातार हो रही खोजों के कारण पैदा हो रहे उत्पादों और सेवाओं को मानवता के लिए खतरा बताया था। उन्होने वर्तमान सभ्यता को अंतहीन इच्छाओं और शैतानिक सोच से प्रेरित बताया था। उनके अनुसार असली सभ्यता अपने कर्तव्यों का पालन करना और नैतिक और संयमित आचरण करना है। उनका दृष्टिकोण था कि लालच और जुनून पर अंकुश होना चाहिए। इस अर्थ में उनकी पुस्तक हिंद स्वराज टिकाऊ विकास का घोषणापत्र है। जिसमें कहा गया है कि आधुनिक शहरी औद्योगिक सभ्यता मे ही उसके विनाश के बीज सन्निहित हैं।गांधी जी ने बहुत पहले ही समझ लिया था कि कोई भी अर्थव्यवस्था जो केवल भौतिक समृद्धि और भौतिक संसाधनों के बंटवारे तथा आधिपत्य को केंद्र में रखती है, कभी भी सफल नहीं हो सकती। नैतिक रूप से पतित मनुष्य बाजार के संतुलन से अपने निजी मुनाफे के सृजन के लिए हमेशा खिलवाड़ करेगा और टेक्नोलॉजी का उपयोग अपने वर्चस्व की स्थापना के लिए करेगा। यदि आप बहुत सतर्कतापूर्वक अवलोकन करें तो टेक्नोलॉजी का उपयोग विकसित देशों द्वारा अविकसित एवं विकासशील देशों को स्वयं पर आश्रित बनाए रखने तथा मनुष्य की निजता पर अतिक्रमण करते हुए उसे अपनी सतत निगरानी और नियंत्रण में रखने हेतु किया जा रहा है। पहले के उपनिवेशवाद के दौर में शक्ति और वर्चस्व की भूख सैन्य हस्तक्षेप और युद्धों की जन्मदात्री थी किंतु नवउपनिवेशवाद के इस दौर वैश्विक अर्थव्यवस्था और तकनीकी क्रांति तथा नवउदारवाद अप्रत्यक्ष आर्थिक नियंत्रण द्वारा सत्ता और सर्वोच्चता की भूख की हिंसक परितुष्टि कर रहे हैं।1942 से लेकर 1945 तक का समय वैश्विक इतिहास में अहम है। दुनिया के सारे बड़े देश अपने संसाधनों को युद्ध में झोंक रहे थे। दुनिया के अगुआ नेता युद्ध को ही समाधान मान रहे थे। लेकिन उसी समय गांधी अहिंसा की अवधारणा के साथ पूरे जैव जगत के लिए करुणा की बात करते हैं। हिंसा सिर्फ शारीरिक नहीं होती है। यह विचारधारा के स्तर पर भी होती है। आज परोक्ष युद्ध नहीं हो रहे हैं, लेकिन जिस तरह से पर्यावरण के साथ हिंसा हो रही है उसके शिकार नागरिक ही हो रहे हैं। जिस तरह दुनिया के अगुवा देश पर्यावरण को धता बताकर खुद को सबसे पहले बताता है तो इस समय गांधी याद आते हैं। आज के संदर्भ में देखें तो आपको गांधी एक पर्यावरण योद्धा भी नजर आएंगे, उनकी विचारधारा में आप एक पर्यावरणविद की सोच भी देख सकते हैं। वास्तव में यह कहना अधिक प्रासंगिक होगा कि गांधीवाद के गर्भ में ही पर्यावरण छुपा बैठा है। गांधीवाद ने विकास और विनाश की बहस छेड़ी थी। वे सिर्फ इंसानों की ही नहीं जैव समुदाय की बात कर रहे थे। हमारी शिक्षा व्यवस्था हमें किस ओर ले जा रही है और शिक्षा का मकसद क्या होना चाहिए इस पर वे चेतावनी दे चुके थे। साधन और साध्य की शुचिता की बात करते हैं तो आप गांधी की बात करते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि पर्यावरण का बीज गांधीवाद की पौधशाला में रोपा जा चुका था।आजादी के पहले ही गांधी ने इंसानी जीवन और पर्यावरण के लिए स्वच्छता की अहमियत समझी थी और आज भी गांधी स्वच्छता के पर्याय बने हुए हैं। इन दिनों हमारे देश में भी स्वच्छता अभियान जोरों पर है। लेकिन गांधी के अभियान और इसमें भाव का फर्क है। सिर्फ सरकारी मशीनरियों के झोंके जाने के कारण इसमें सामुदायिक भाव नहीं आ पाया है। गांधी की डेढ़ सौवीं जयंती पर उन्हें स्वच्छ

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भारत का जो तोहफा देने की सरकारी तैयारी है उससे जनभागीदारी नहीं जुड़ पाई है। और इसकी खास वजहें भी हैं। यह बहुत अहम है कि हमारे घरों में शौचालय हो, लेकिन उससे भी अहम है कि सबके सिर पर एक छत हो। इसके साथ ही जिस तरह के शौचालयों का निर्माण किया जा रहा है पानी की किल्लत वाले इलाकों में वे बेमानी हैं। जब पीने और खाना पकाने के लिए ही पर्याप्त पानी नहीं हो तो शौचालयों के इस्तेमाल के लिए पानी कहां से लाएंगे। हमें ऐसी तकनीक को अपनाना होगा जो हमारे पर्यावरणीय हालात से कदमताल कर सके। अभी जलरहित शौचालय की तकनीक सामने आ गई है। ऐसी तकनीकों को दूर–दराज के गांवों तक पहुंचाना चाहिए।विकास के मार्ग का चयन तो मुख्यतः विकासशील देशों की समस्या है, परन्तु विकास का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व के पर्यावरण पर पड़ता है,विकासशील तथा अल्पविकसित देशों के औद्योगीकरण के लिए और यहाँ की विशाल जनसंख्या की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरी हो जाता है,दसू री ओर विकसित तथा औद्योगीकृत देशों में उपभोग का स्तर इतना ऊँचा है कि वहाकी अपेक्षाकृत कम जनसंख्या के उपभोग के लिए भी प्राकृतिक संसाधनों का भरपरू दोहन किया जाता है। दोनों स्थितियों विश्व के प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव पडता़ है और समस्या उत्पन्न होती है। पर्यावरणीय असंतुलन के कारण वैश्विक तापन और पर्यावरण ह्रास के प्रति चिंता बढ़ती ही जा रही है, परन्तु गाँधी जी ने बहुत पहले ही कहा था कि इस धरती क संसाधन सीमित हैं और एक न्याय संगत एवं संपोषित समाज व्यवस्था की स्थापना की आवश्यकता है। गाँधीजी ने मानवीय आवश्यकताओं, मागों और लालच के प्रति अपने विचार प्रकट किए हैं, इसको अपनाकर पर्यावरणीय कार्यक्रम को सफल बनाया जा सकता है। 'अर्नीस' सुविचारित पारिस्थितिकी विचार के प्रवर्तक हैं, उन्होंने लिखा है कि ''गाँधीजी का आदर्श, उन कुछ आदर्शों में से एक है, जो पर्यावरण संतुलन को

दर्शाता है, और उनके द्वारा पाश्चात्य संसार की भौतिक प्रचुरता और अपशिष्ट की आलोचना कोपारिस्थितिकीय आन्दोलन से जुड़े नेताओं ने स्वीकार किया है।''

वायु प्रदूषण पर टिप्पणी करते हुए उन्होने कहा था कि उचित उपचार और उपायों के जरिए वायु प्रदूषण को रोकना स्थिरता और टिकाऊ विकास का आवश्यक पहलू है। यहां यह ध्यान देने योग्य है कि महात्मा गांधी जब 1913 में दक्षिण अफ्रीका में अपने पहले सत्याग्रह आंदोलन की अगुवाई कर रहे थे तभी उन्होने यह महसूस कर लिया था कि आधुनिक समाज तक स्वच्छ हवा पहुचाने में लागत आयेगी। अपने एक लेख टू हेल्थ में उन्होने साफ हवा की जरूरत पर रोशनी डाली है। इसमें साफ वायु पर एक अलग से अध्याय है। जिसमें कहा गया है कि शरीर को तीन प्रकार के प्राकृतिक पोषण की आवश्यकता होती है– हवा, पानी और भोजन। लेकिन साफ हवा सबसे अधिक आवश्यक है। वे कहते हैं कि प्रकृति ने हमारी जरूरत के हिसाब से पर्याप्त हवा फ्री में दी है। लेकिन उनकी पीढ़ा थी कि आधुनिक सभ्यता ने इसकी भी एक कीमत तय कर दी है। वे कहते हैं कि किसी व्यक्ति को कहीं दूर जाना पड़ता है तो उसे साफ हवा के लिए पैसा खर्च करना पड़ता है। आज से करीब 100 साल पहले 1 जनवरी 1918 को अहमदाबाद में एक बैठक को संबोधित करते हुए उन्होने भारत की आजादी को तीन मुख्य तत्वों वायु, जल और अनाज की आजादी के रूप में परिभाषित किया था। उन्होने 1918 में जो कहा और किया था उसे अदालतें आज जीवन के अधिकार कानून की व्याख्या करते हुए साफ हवा, साफ पानी और पर्याप्त भोजन के अधिकार के रूप में परिभाषित कर रही हैं।

1930 के दशक के अंतिम दिनो में उन्होने लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए कहा था कि इसमें सभी नागरिकों को शुध्द हवा और शुध्द पानी उपलब्ध होना चाहिए। आज से 100 साल पहले साफ हवा पर गांधी की समझ , चिंतन और भारत की स्वतंत्रता व लोकतंत्र के प्रति उनके विचार आज 21वीं सदी में भी उन्हें समकालीन बनाते हैं। उनके कई बयान हैं जिन्हें टिकाऊ विकास के लिए उनके विश्वव्यापी दृष्टिकोण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। यूरोपीय संघ के संदर्भ में दिए गए उनके एक बयान की प्रासंगिकता आज पूरे मानव समाज को है। उन्होने 1931 में लिखा था कि भौतिक सुख और आराम के साधनों के निर्माण और उनकी निरंतर खोज मे लगे रहना ही अपने आप में एक बुराई है। उन्होने कहा कि मैं यह कहने का साहस करता हूं कि यूरोपीय लोगों को अपने दृ ष्टिकोण पर पुनर्विचार करना होगा। इससे उनका काफी नुकसान होगा और वे आरामतलबी के दास बन जायेंगे। असल में यूरोपीय लोग अब गांधी जी की बोतों को सुन रहे हैं। यह बात कुछ ब्रिटिश नागरिकों के दृष्टिकोण से भी स्पष्ट है जिन्होने सरल जीवन जीने के लिए ऊर्जा और भौतिक संसाधनों पर से अपनी निर्भरता कम कर ली है। उन्होने शून्य ऊर्जा इकाई स्थापित की है। यह एक ऐसी प्रणाली है जिसके जरिए लंदन में एक हाउसिंग सोसाइटी चलाई जा रही है। सोसाइटी के प्रवेश द्वार पर लिखा है कि दृ यूके में एक व्यक्ति जितना उपभोग करता है अगर दुनिया का हर व्यक्ति उतना ही उपभोग करे तो सब की जरूरतो को पूरा करने के लिए हमें धरती जैसे तीन ग्रहों की जरूरत होगी। गांधी जी ने 8 दशक पहले ही लिख दिया था कि यदि भारत ने विकास के लिए पश्चिमी मॉडल का पालन किया तो उसे अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक अलग धरती की जरूरत होगी। लंदन की इस हाउसिंग सोसाइटी के लोग किसी भी जलवायु और पर्यावरण आंदोलन से नही जुड़े हैं। वे सभी अलग– अलग कामों और व्यवसायों से जुड़े हुए हैं। ये सभी जीवंत मध्यम वर्ग का हिस्सा हैं। बस इन लोगों का खपत और उत्पादन की दृष्टि कोण ही इन्हे दूसरों से अलग बनाता है।उन्होने निर्णय ले रखा है कि दूर दराज के इलाकों से लाये जाने वाले खाद्य पदार्थ वे नही खायेंगे।उनका मानना है कि

RRIJM 2015, All Rights Reserved

जब वस्तुओं को लंबी दूरी से ले जाया जाता है तो परिवहन, संरक्षण और पैकिंग में बहुत ज्यादा ऊर्जा का उपयोग किया जाता है। दूर स्थानों से भोजन के लाने और उनपर निर्भरता से काफी ऊर्जा का प्रयोग होता है, जिसकी वजह से काफी अधिक मात्रा में कार्बन डाई आक्साइड और अन्य ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। इसलिए उन्होने कुछ किलोमीटर के भीतर उपलब्ध पदार्थों के प्रयोग का निर्णय लिया है।वर्तमान में रियो–डी–जेनेरियो में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन में घोषित 'एजेण्डा 21' सेक्शन–4, कुछ हद तक पर्यावरण पर गाँधीवादी विचारों को ही प्रदर्शित करता है। गाँधी शाश्वत विचारों के प्रणेता है। गाँधी के विचारों में सत्य एवं सत्य के आचरण की प्रयोगिक उपस्थिति एवं प्रासंगिकता है। गाँधी के विचार नैसर्गिक संरेख में कार्य–कारण की समग्र व्याख्या करते है। गाँधी ने उन विचारों को अंगीकार किया जिनसे केवल व्यक्ति का ही नही प्रत्युति, समष्टि का भी कल्याण संभव होता है। गाँधी के विचारों को राष्ट्र की प्राचीरों की परिधि में समायोजित नहीं किया जा सकता है बल्कि यह सार्वत्रिक विचार है जो वैश्विक दृष्टि की अपेक्षा करते है। अतः गाँधीवाद केवल राजनीतिक विचारधारा तक सीमित दर्शन नहीं है बल्कि इसके विपरीत गाँधी अर्थ, शिक्षा, मनोविज्ञान, समाज, आध्यात्म, दर्शन, विकास की समग्र फलश्रुति है।बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकसित एवं विकासशील देशों ने अपनी भौतिक उपलब्धियों के माध्यम से पर्यावरण के समक्ष गम्भीर चुनौती प्रस्तुत की है। विश्व का पर्यावरण इस प्रकार असंतुलित हुआ है कि मावनीय जीवन धीरे–धीरे संक्रमण की ओर बढ़ रहा है। अलनीनों, लानीनों के प्रभाव ने मौसम चक्र को मानवीय जीवन के प्रतिकूल बना दिया है। विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। कृषि पर जनसंख्या का महत्तम भाग की आजीविका निर्भर करती है। विकासशील देशों के नागरिकों की क्रय शक्ति अपेक्षाकृत कमजोर है। इन देशों में आधारभतू संरचना का विकास नही हो पाया है। पर्यावरण संकट के फलस्वरूप कल्याणकारी बजट का अधिकाधिक भाग स्वास्थ्य आदि मदों में व्यय हो रहा है, जिसके मलू में पर्यावरण की समस्या है। भारत जैसे अधिकाधिक जनसंख्या वाले राज्य में मेट्रोपोलिटन सिटी में गम्भीर पर्यावरणीय संकट उपस्थित हो गया है। यहाँ पर्यावरण के अपदूषण का महत्तम स्तर देखने को मिलता है। पर्यावरण का प्रतिकलू प्रभाव प्रशासन एवं राजनीति पर पड़ता है लेकिन इस सन्दर्भ में यह कहना युक्तिसंगत होगा कि पर्यावरण का प्रश्न भारतीय राजनीति का मुद्दा नहीं बन पाया है। पर्यावरण के अर्थ एवं सन्दर्भ में प्रशासन को विशेष हस्तक्षेप करना पड रहा है। भारत में नदियों का प्रदूषण, पर्यावरण समस्या का ज्वलतं उदाहरण है। भारत के पहाड़ों का भूस्खलन, भारत के बृहत्तर क्षेत्र में सूखा तो इसके विपरीत किन्हीं–किन्हीं भू–क्षेत्रो में बाढ़ की भयावह विभिषिका, जन जीवन को गहरे रूप में प्रभावित कर रहा है। भारत के राजकोषीय बजट पर पर्यावरण का विशिष्ट प्रभाव पड रहा है। क्योंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। कल्याणकारी बजट की कटौती करके पर्यावरण को संतुलित करने का प्रयास प्रशासन को करना पडता है। गाँधी एक ऐसे चितंक एवं विचारक हैं, जिनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं अन्य विचारों में प्रकृति के अनुक्रम में जीवन को अवधारित करने का एवं सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने का सामर्थ्य है। गाँधीवादी विचार कार्य–कारण सम्बन्धों पर अवलम्बित है, फलतः गाँधी के विचारों में एक नैसर्गिक गतिशीलता है। जिन विचारों में गतिशीलता एवं गत्यात्मक ऊर्जा होती है, वे विचार शाश्वत एवं सार्वत्रिक होते हुए प्रत्येक समस्या का समाधान प्रस्तुत करने की शक्ति रखते हैं, गाँधी की कुटीर उद्योग की अवधारणा, गाँधी की अहिसां की अवधारणा, गौ वध निषेध एवं गौ संरक्षण, स्वच्छता एवं आत्म स्वावलंबन का मार्ग पर्यावरण को संतुलित करने का सद्प्रयास है। गाँधी मलूतया नदियों पर बड़े–बड़े बैराज के विरोधी रहे है। गाँधी की दरू संवेदी अर्न्तदृष्टि सुदूर भविष्य की पर्यावरणीय संकट की संभावनाओं की खोज करने में सक्षम है। गाँधी ने वर्षो पूर्व प्रकृति के अनुसार विकास के शत्रु की संकल्पना की अभिव्यक्त की थी, जो पर्यावरणीय संकट का सफल समाधान है। टिहरी बाँध, नर्मदा सागर बाँध के पर्यावरणीय असंतुलन ने अपने भयावह रूप का दिग्दर्शन करा दिया है। यदि भारत के पर्यावरणीय संकट का समाधान गाँधी के विचारों को अंगीकार करके किया जाय, तो पर्यावरण की भयावह एवं विनाशकारी उपस्थिति मानवता के लिए घनघोर संकट उत्पन्न नहीं करेगा। गाँधीवादी विचारों में पर्यावरण के इन्हीं प्रश्नों का सहज, सरल प्रायोगिक समाधान निहित है। सबसे महत्वपर्ूण तथ्य यह है कि गाँधी पर्यावरण संकट के महत्वपर्ूण बिन्दु को अपने चितंन का केन्द्रीय विषयवस्तु बनाते हुए, इसका प्रायोगिक अनुप्रयोग स्वयं अपने जीवन में किया है। गाँधी के व्यवहारिक प्रयोग पर्यावरण सुरक्षा की राष्ट्रीय दीक्षा देते है। आज के सन्दर्भ में गाँधी जी की दो बातें बहुत महत्वपर्ूण है।

1–''हम जिस ढगं से चाहे प्रकृति के उपहारों का प्रयोग कर सकते है परन्तु प्रकृति के

बही खाते में लेन–देन सदैवसमान होता है।''

2–''अगर किसी वस्तु की आवश्यकता न होने पर भी उसे अपने पास रखता है तो

वह चोरी है।''

गाँधीजी चाहते थे कि मानव जाति प्रत्येक वस्तु की संरक्षक के रूप में कार्य करे। गाँधीजी स्वच्छता साफ–सफाई और स्वास्थ्य के प्रति भीजागरूक थे। उनके अनुसार

''जो व्यक्ति लापरवाही से यहाँ–वहाँ थूककर,कूड़ा–करकट फेंककर था किसी अन्य

रूप में जमींन को गन्दा करके वायु को दूषित करता है। वह मनुष्य और प्रकृति

के प्रति पाप करता है''

उनके अनुसार एक आदर्श गांव वह है जो स्वयं सम्पूर्ण साफ–सफाई का ध्यान रखता है। इसमें ऐसे झोपडियाँ होनी चाहिए जोअपने 5 मील वर्ग परिधि में मिलने वाली सामग्री से बनी होंगी और इनमें पर्याप्त रोशनी व खिड़कियां होनी चाहिए। यद्यपि गाँधीजी महत्वपर्ण राष्ट्रीय आन्दोलन के कार्य में व्यस्त रहते थे फिर भी उन्होंने एक रद्दी का कागज, पानी का एक बूँद, गेहूँ के एक दाने की तथा एक मिनट बर्बादी की भी आज्ञा नहीं दी। वर्तमान में सर्वत्र विकास के नये प्रतिमान जिनमें, भौतिक, वैज्ञानिक व तकनीकि पहल ूस्थापित हो चुके हैं, इसके अलावा विकास की गति दिन व दिन बढ़ती ही जा रही है। यह प्रगति निश्चित रूप से अत्यंत सराहनीय व महत्वपर्ण भी है परन्तु साथ ही जब हम अन्य मानवीय पक्षों पर दृष्टिपात करते हैं तो यह स्पष्ट दिखता है कि इन तमाम भौतिक उपलब्धियों व तकनीकि प्रगतियों के बीच मानवीय मल्यों का अत्यधिक ह्रास हुआ है आज विश्व में बढते आतंकवाद, जातीय व सांप्रदायिक हिंसा, धनी व गरीब देशों के बीच बढती खांई, छोटे राष्ट्रों की सम्प्रभुता को आसन्न खतरे, स्त्री–पुरूष विभेद, पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यद्यपि हमने भौतिक विकास के क्षेत्र में नवीन ऊँचाईयों को प्राप्त किया है परन्तु हम एक समग्र मानवीय विकास, जिन्हें मानवीय मूल्यों के विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। पर्यावरणीय संकट एवं इससे उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों से निपटने के लिए आज वर्तमान समय में गाँधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतकों में गाँधी पहले ऐसे राजनीतिक चिंतक हैं, जिन्हें पर्यावरण के संकट की गम्भीरता की गहरी अनुभूति थी। 1928 मे ही उन्होने चेतावनी दी थी कि विकास और औद्योगिकता में पश्चिमी देशों का पीछा करना मानवता और पृथ्वी के लिए खतरा पैदा करेगा। उन्होने कहा कि भगवान न करे कि भारत को कभी पश्चिमी देशों की तरह औद्योगीकरण अपनाना पड़े। कुछ किलोमीटर के एक छोटे से द्वीप इंग्लैंड के आर्थिक साम्राज्यवाद ने आज दुनिया को उलझा रखा है। यदि सभी देश इसी तरह आर्थिक शोषण करेंगे तो यह दुनिया टिड्डियों के एक दल की तरह हो जायेगी। गाँधी के सविनय–अवज्ञा, अहिसांत्मक प्रतिरोध, अपील, अहिसां, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य जैसे राजनीतिक चिंतन एवं साधन पर्यावरण संतुलन के लिए महत्वपर्ण नीति के रूप में उपयोगी हो सकते हैं। सुन्दरलाल बहुगुणा का चिपको आन्दोलन गाँधीवादी विचारों की पर्यावरणीय सुरक्षा की उद्घोषणा एवं प्रत्याभूति के सदृश्य है। गाँधी के राजनीतिक सिद्धान्त प्रकृति के प्रतिकूल किसी भी अवधारणा को अंगीकार नहीं करते हैं। गाँधी ने अपने दैनिक जीवन में स्वच्छता को सर्वोच्च महत्ता प्रदान की थी। गाँधी स्वयं दलित बस्तियों में जाकर दलितों का मैला साफ करते थे तथा स्वयं स्वच्छता की प्रेरणा देते थे। गाँधीवादी अवधारणा मनुष्य को मशीन मानने की संकल्पना के प्रतिकूल थी। गाँधीवादी विचारों में मनुष्य को एक मानवीय संसाधन मानते हुए श्रम की महत्ता पर अवधारित एक ऐसे राजनीतिक आर्थिक दर्शन को अस्तित्व में लाना था, जिससे पर्यावरण पूरी तरह सुरक्षित रह सके। कुटीर उद्योग की अवधारणा पर्यावरण सुरक्षा का ब्रह्मास्त्र है। गाँधीवादी प्रयोग पर्यावरण की सुरक्षा को प्रत्याभूति देते हैं, फलतः गरीब व्यक्ति के जीवन स्तर को गाँधीवादी रास्ते से ही समृद्ध बनाया जा सकता है। ऐसा इसलिए कि पर्यावरण सुरक्षा को दृष्टिपथ में रखते हुए अर्थव्यवस्था का अभिकेन्द्र राज्य को बनाया जाएगा और ग्रामीण जनों को रोजगार उपलब्ध होगा तथा जीवन स्तर में अशातीत परिवर्तन होगा तो पर्यावरण भी पूर्ण रूप से अक्षुण्य बना रहेगा। गाँधी विनाशकारी हथियारों के वैश्विक कटूनीति के घनघोर विरोधी थे क्योकि सम्पूर्ण अहिसां का नाम गाँधी है। नागासाकी और हिरोशिमा की त्रासदी विनाशकारी हथियारों के कटूनीति का भयावह स्वरूप है। विश्व की राजनीति, नागासाकी एवं हिरोशिमा पुनरावृत्ति के पक्ष में नही है। आज विश्व में महाशक्तियों के पास विश्व की मानवता एवं विश्व के पर्यावरण को विनष्ट करने की शक्ति का अस्तित्व है। इस नाकारात्मक वैश्विक राजनीति का प्रतिरोध गाँधीवादी विचारों के माध्यम से ही संभव हो सकेगा। गाँधी का सम्पूर्ण वांग्मय और उनके विचार, प्रकृति के अत्यंत समीप है। उसका व्यवहारिक प्रवर्तन सहज, सरल एवं सम्भव है। उसकी संभाव्यता का परिणाम भी लगभग निश्चित होता है। गाँधी के विचारों में जीवन की ऐसी सरलता, सहजता, सौम्यता तथा प्रकृति के प्रति समादर की भावना से युक्त है, जिसके माध्यम से पर्यावरण की विकृतियों से संघर्ष किया जा सकता है तथा समाधान के कई पक्षों को स्पर्श किया जा सकता है। इस प्रकार स्वयं प्रकृति को महत्व देना पर्यावरण सम्बन्धी सबसे बुनियादी भावना है। आज 21वीं सदी में पर्यावरण सम्बन्धी गाँधीवादी विचार धारा जो सामाजिक न्याय, संसाधनों का समतामूलक उपयोग, साझी सम्पत्ति संसाधन के रूप में अति प्रासंगिक है। अंग्रेजों ने वनों को बस धन कमाने का जरिया ही समझा था। इसके साथ ही गांधी जी ने वर्षा जल के संचयन पर भी जोर दिया। 1947 में दिल्ली में प्रार्थना में बोलते समय उन्होंने बारिश के पानी के प्रयोग की वकालत की थी। और इससे फसलों की सिंचाई पर जोर दिया था। किसानों पर 2006 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में स्वामीनाथन आयोग ने भी सिंचाई की समस्या को हल करने के लिए बारिश के पानी के उपयोग की सिफारिश की थी।जर्मनी की ग्रीन पार्टी के संस्थापकों मे से एक पेट्रा केली ने पार्टी की स्थापना में महात्मा गांधी के विचारों के प्रभावों को स्वीकार करते हुए लिखा है कि हम अपने काम करने के तरीको में महात्मा गांधी से बहुत प्रेरित हुए हैं। हमारी धारणा है कि हमारी जीवनशैली इस तरह की होनी चाहिए कि हमें लगातार उत्पादन के लिए कच्चे माल की आपूर्ति होती रहे और हम उसका उपयोग करते रहें। कच्चे माल के उपयोग से पारिस्थितिकी तंत्र उन्मुख जीवन शैली विकसित होगी और

RRIJM 2015, All Rights Reserved

साथी ही अर्थव्यवस्था से हिंसक नीतियां भी कम होंगी।एक पुस्तक सर्विविंग द सेंचुरी दृफेसिंग क्लाउड कैओस जो प्रोफेसर हर्बर्ट गिरार्डेट द्वारा संपादित की गई है, उसमें चार मानक सिद्धांतों – अहिंसा, स्थायित्व, सम्मान और न्याय को इस सदी और पृथ्वी को बचाने के लिए जरूरी बताया गया है। धीरे–धीरे ही सही दुनिया गांधी जी और उनके बताए रास्तों को अपना रही है। ये सिद्धांत सदैव उनके जीवन के केन्द्र में रहे। द टाइम मैग्जीन ने अपने 9 अप्रैल 2007 के अंक में दुनिया को ग्लोबल वार्मिंग से बचाने के 51 उपाय छापे। इनमें से 51वां उपाय था कम उपभोग, ज्यादा साझेदारी और सरल जीवन। दूसरे शब्दों में कहे तो टाइम मैग्जीन जैसी पत्रिका जिसे पश्चिमी देशों का मुखपत्र कहा जाता है, वह अब गेलोबल वार्मिंग के खतरे को रोकने के लिए गांधी जी के रास्तों को अपनाने के लिए कह रही है। ये सभी तथ्य बताते हैं कि पृथ्वी को बचाने के लिए गांधी जी की मौलिक सोच और उनके विचार कितने महत्त्वपूर्ण और गहरे हैं। इसलिए टिकाऊ और सतत् विकास के लिए गांधी जी के विचारों को फिर से समझना अनिवार्य है। इस प्रकार बढ़ती पर्यावरणीय चुनौतियों की समस्या के समाधान में गाँधीवादी विचारधारा की महत्ता अक्षुण्य है।

सन्दर्भ

1. महात्मा गाँधी : 'हमारे गाँवों का पुनर्निर्माण, नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदाबाद, सन् 1948 पृ.9
2. महात्मा गाँधी : मेरे सपनों का भारत, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, सन् 1960 पृ.15
3. न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी : 'गाँधी विचार और पर्यावरण',सर्व सेवा सघं प्रकाशन, वाराणसी, 2009 पृ.91
4. अमर्त्य सेन : 'आर्थिक विकास एवं स्वातंत्र्य', राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2008 पृ.101–105
5. महात्मा गाँधी : 'गांधी–वाणी', गांधी साहित्य प्रकाशन मदिर, इलाहाबाद, सन् 1939 पृ. 31
6. गांधीजी : 'समग्र ग्राम सेवा', सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1956 पृ.51
7. जयप्रकाश नारायण : 'समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र', बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, सन् 1988 पृ.17
8. विनोबा भावे : 'अहिसंक समाजवाद की ओर', नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, सन् 1955 पृ. 91–93
9. कमल नयन काबरा : 'भूण्डलीकरण', प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005 पृ. 27
10. 10.सिद्धराजढड्ढा : 'वैकल्पिक समाज–रचना', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, पृ.17
11. 11.प्रो0 बी0एम0 शर्मा : 'गाँधी दर्शन के विविध आयाम', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007 पृ.21
12. 12.डी0एन0 चतुर्वेदी : 'लोकनीति मूलक अर्थव्यवस्था', लोक प्रकाशन गृह, वाराणसी, 1968 पृ. 91

RRIJM 2015, All Rights Reserved